सरल

हवन विधि

साधारण होम

सरल

हवन विधि

साधारण होम एवं संक्षिप्त हवन कर्म पद्धति

सम्पादक—पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी

मूल्य—१०.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

Shree Ram Priwar

माता नील सरस्वती तंत्र साधना पुस्तक बिल्कुल फ्री में। पुस्तक हम आप को मुफ्त में उपलब्ध करा रहे हैं।।

Shree Ram Priwar

597 बार देखा गया · 5 माह पहले

माता षोडशी तंत्र पुस्तक फ्री में उपलब्ध।। हम आपको माता षोडशी की तंत्र पुस्तक मुफ्त में दे रहे हैं।

Shree Ram Priwar

293 बार देखा गया · 4 माह पहले

तंत्र के दिव्य प्रयोग Pdf बिल्कुल फ्री में उपलब्ध है।

Shree Ram Priwar

606 बार देखा गया · 4 माह पहले

बावन जंजीरा Pdf बिल्कुल फ्री। यहां हम आपको बावन जंजीरा पुस्तक बिल्कुल फ्री में उपलब्ध करवा रहे हैं।

Shree Ram Priwar

1.1 हज़ार बार देखा गया · 4 माह पहले

काली उपासना pdf बिल्कुल फ्री में प्राप्त करें।। श्री राम परिवार।।

Shree Ram Priwar

276 बार देखा गया · 4 माह पहले

श्री हनुमान तंत्र साधना पुस्तक pdf बिल्कुल फ्री।।

Shree Ram Priwar

358 बार देखा गया · 3 माह पहले

भगवान दत्तात्रेय तंत्र साधना पुस्तक PDF बिल्कुल फ्री।। श्री राम परिवार।। #indiadevotional #साधना

Shree Ram Priwar

1 हज़ार बार देखा गया · 3 माह पहले

शिव सहस्त्रनाम स्त्रोत्र pdf निशुल्क।। श्री राम परिवार।। #makali #lordsiva #Mahakal #भजन

Shree Ram Priwar

32 बार देखा गया · 3 माह पहले

श्री विद्या साधना पुस्तक pdf बिल्कुल फ्री। श्री राम परिवार। #महाकाली #महाकाल #india.
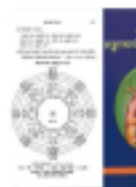
Shree Ram Priwar

820 बार देखा गया · 3 माह पहले

 होम पेज चर्चित लाइब्रेरी

सुलेमानी बावन जंजीरा साधना विधि और सुलेमानी पुस्तक pdf बिल्कुल फ्री #shreerampriwar #india #1
116 बार देखा गया · 4 दिन पहले

आप और मैं episode 5 #shreerampriwar #Qna #india #श्रीरामपरिवार
29 बार देखा गया। · 6 दिन पहले

माता कामख्या तंत्र पुस्तक pdf बिल्कुल फ्री। #श्रीरामपरिवार #Shreerampriwar #india #1 #kamkyatantra
304 बार देखा गया · 1 सप्ताह पहले

रुद्राक्ष भस्म और त्रिपुंड I rudraksha bhasam and tripund pdf #shreerampriwar #india #covid-19
77 बार देखा गया। · 1 सप्ताह पहले

हनुमंत रहस्य pdf बिल्कुल फ्री में। #shreerampriwar #hanumaji #hanuman #india #1
163 बार देखा गया · 1 सप्ताह पहले

आप और मैं episode 4 #Qna #shreerampriwar #india .
24 बार देखा गया। · 1 सप्ताह पहले

हर तरीके के रोग से निजात पाने का सबसे सरल उपाय। महामृत्युंजय मंत्र सर्वोत्तम प्रयोग #shreerampriwar
27 बार देखा गया। · 2 सप्ताह पहले

घर में सुख शांति लाने और सारे बिगड़े काम बनाने का सबसे सरल। #shreerampriwar #mhakal #coronavirus #1
19 बार देखा गया। · 2 सप्ताह पहले

कर्ज मुक्ति का सबसे सरल उपाय। घर में सुख शांति आएगी और कर्ज से मुक्ति मिलेगी। #Shreerampriwar #india
89 बार देखा गया। · 2 सप्ताह पहले

तंत्र शास्त्र और ज्ञान पुस्तक

Shree Ram Priwar

36 वीडियो • 301 बार देखा गया

मां बगलामुखी तंत्र पुस्तक फ्री में। मां बांग्ला मुखी पुस्तक pdf निशुल्क उपलब्ध।।

Shree Ram Priwar

साधना से संबंधित और हर पुस्तक।। हर प्रकार की साधना से संबंधित पुस्तकें आप हमारे चैनल पर मिल जाएंगी।

Shree Ram Priwar

महाकाली तंत्र शास्त्र फ्री में उपलब्ध ।। महाकाली तंत्र शास्त्र आपको बिल्कुल निशुल्क उपलब्ध।।

Shree Ram Priwar

माता नील सरस्वती तंत्र साधना पुस्तक बिल्कुल फ्री में। पुस्तक हम आप को मुफ्त में उपलब्ध करा रहे हैं।।

Shree Ram Priwar

माता षोडशी तंत्र पुस्तक फ्री में उपलब्ध।। हम आपको माता षोडशी की तंत्र पुस्तक मुफ्त में दे रहे हैं।

Shree Ram Priwar

तंत्र के दिव्य प्रयोग Pdf बिल्कुल फ्री में उपलब्ध है।

Shree Ram Priwar

बावन जंजीरा Pdf बिल्कुल फ्री। यहां हम आपको बावन जंजीरा पुस्तक बिल्कुल फ्री में उपलब्ध करवा रहे हैं।

Shree Ram Priwar

काली उपासना pdf बिल्कुल फ्री में प्राप्त करें।। श्री राम परिवार।।

Shree Ram Priwar

सरल

हवन विधि

साधारण होम

सरल
हवन विधि

साधारण होम एवं संक्षिप्त हवन कर्म पद्धति

सम्पादक—पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी

मूल्य—१०.००

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार (उ. प्र.)
फोन : (०१३३४) २२६२९७

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार (उ. प्र.) फोन : (०१३३४) २२८५१०

मुख्य विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
४६९४, चरखेवालान (निकट नई सड़क, दाईवाड़ा)
दिल्ली-६ फोन : (०११) २३९५०६३५

मुद्रक : **राजा आफसेट प्रिंटर्स,** दिल्ली-९२

SARAL HAWAN VIDHI

Edited By : Pt. Jawala Prasad Chaturvedi

Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

अनुक्रमणिका

हवन पूजन सामग्री ५

आहुति करने की विधि तथा प्रमाण ७

अथ नवग्रह काष्ठ (समिधा) प्रमाण ७

मांगलिक श्लोक ८

सर्वतोभद्रमण्डलमिदम् ९

गौरीतिलकमण्डलमिदम् १०

श्री विघ्नविनाशक गणेश यन्त्र ११

अथ पूजन विधि १४

अथ स्वस्तिवाचन १७

गणेश पूजन २५

कलश पूजन ४०

प्रार्थना ४४

कलश की प्रार्थना ४५

साधारण होम (हवन) ४७

संक्षिप्त हवन कर्म पद्धति ५४

सर्वतोभद्रमंडल देवतानां होमः ५९

कर्मकाण्ड की कुछ अन्य शुद्ध पुस्तकें

हवन पूजन सामग्री

पूजन सामग्री : श्रीफल : १ (नारियल), हवन सामग्रीः १ पैकेट, धूपबत्ती, अगरबत्ती, कलावा (मौली), सुपारी : ९, पान : ५, बताशे : २५० ग्राम, पंचफल : ५ (ऋतुफल), पंचमेवा : २०० ग्राम, रोली : २ रुपये की, सिन्दूर : २ रुपये का, ताम्बूल (पान) : ५, चन्दन चूरा : ५० ग्राम या १० ग्राम, कलश (मिट्टी का) अथवो लोटा : १, आम की टहनी, बन्दन वार, कुशा, दूर्वा (दूब), गंगाजल, हल्दी, सूखा आटा : ५० ग्राम प्रति, अबीर, गुलाल—लाल, हरा, पीला, नीला ५० : ग्राम प्रति, लौंग : १० ग्राम, पीली सरसों अथवा काली सरसों : ५० ग्राम, जौ : १.५ किलो (आवश्यकतानुसार न्यूनाधिक), तिल : २ किलो (न्यूनाधिक), शक्कर अथवा चीनी अथवा बूरा : २५० ग्राम (न्यूनाधिक), कर्पूर : २० ग्राम, शुद्ध घी : १ किलो (आवश्यकतानुसार) वेदी के लिए

मिट्टी या रेत (बालू), यज्ञोपवीत : २, टूल : ०.५ मीटर, दिया : १, रुई : १ रुपये की।

हवन की लकड़ी (समिधा) : आम की लकड़ी, पीपल की लकड़ी, ढाक की लकड़ी।

नवग्रह समिधा (लकड़ी) : आक (आखा, मदार, अर्क), खदिर (खैर), अश्वत्थ (पीपल), उदुम्बर (गूलर), ओंगा (चिरचिटा), पलास, शमी, कुशा, दूर्वा (दूब)।

पंचपल्लव : आम का पत्ता, पीपल का पत्ता, बरगद (बड) का पत्ता, जामुन का पत्ता, गूलर का पत्ता।

पंचगव्य : गौमूत्र, गौ का गोबर, गौ का घी, गौ का दही, गौ का दूध।

पंचरत्न : सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, पीतल।

हवन मिश्रण : अनुमानतः तिल से आधे चावल, चावल से आधे जौ, जौ से आधा शक्कर या चीनी, बूरा। यथेष्ठ घी तथा पंचमेवा यह सब हवन सामग्री में मिलायें तो

हवन सामग्री (हवन करने के लिए तैयार हो जाती है)।

इस सामग्री विषय की पुष्टि करता एक श्लोक जो निम्नलिखित प्रकार से है—

एक द्विसिचतुर्भागै ब्रीही-आज्य-यवस्तिलैः।
चरु होमे प्रकर्तव्यम् यथा श्रद्धा च शर्कराः॥

चावल ०.५ किलो, घी १ किलो, जौ १.५ किलो, शक्कर २५० ग्राम, पंचमेवा २०० ग्राम। इस प्रकार के अनुपात मे सामग्री लेकर मिला लें। यह हवन करने के लिए सामग्री तैयार हो जाती है।

आहुति करने की विधि तथा प्रमाण

बीच की २ अँगुली एवं अँगूठे की सहायता लेकर लगभग ३ ग्राम आहुति देना चाहिए। शास्त्रोक्त प्रमाण : ६ माशा भर हवन की आहुति होनी चाहिए।

अथ नवग्रह काष्ठ (समिधा) प्रमाण

ततोऽर्क पलाश खदिराया मार्ग पिप्पलोदुम्बर शमी

दूर्वा कुशदिः नवसमिधो धृता युक्ताः क्रमेण रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु केतुभ्यो नवग्रहेभ्योवह्नौ जुहुयात्।

सूर्य ग्रह के लिए आक की समिधा घी में डुबोकर हवन करना चाहिए। चन्द्रमा ग्रह की समिधा पलाश, मंगल ग्रह की समिधा खैर, बुध ग्रह की समिधा चिरचिटा (अपामार्ग), बृहस्पति ग्रह की समिधा पीपल, शुक्र ग्रह की समिधा गूलर, शनि ग्रह की समिधा शमी, राहु ग्रह की समिधा दूर्वा, केतु ग्रह की समिधा कुशा।

ये समिधा नाम लकड़ी के लिए ही सम्बोधित किया गया है। हवन सामग्री लेकर हाथ में तथा जिस ग्रह का पूजन करना हो उसकी लकड़ी ८ अँगुल की लेकर घी में डुबोकर अग्नि में डालना चाहिए।

मांगलिक श्लोक

सभी पूजन कर्मकाण्ड देवताओं के अनुष्ठान तथा यज्ञ

में सर्वतोभद्रमण्डल चक्र बनाना चाहिए। निम्नलिखित चित्रानुसार—

॥ सर्वतोभद्रमण्डलमिदम् ॥
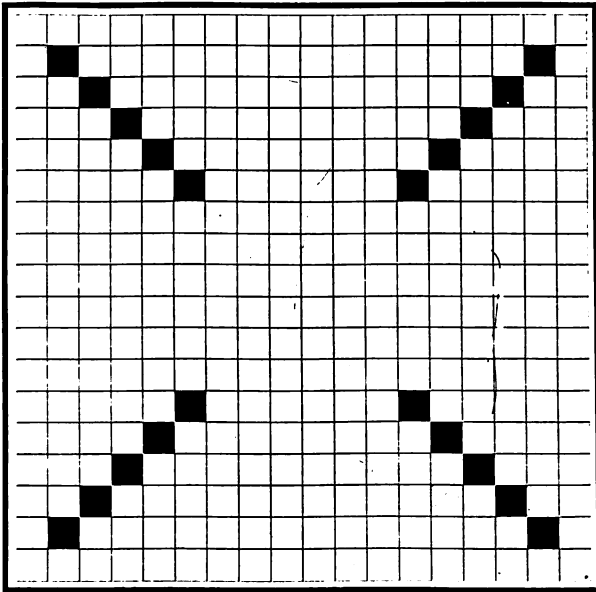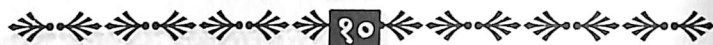
सभी दैविक पूजन अनुष्ठान मंत्र सिद्धि देवी पूजन इत्यादि में गौरी तिलक मंडल चक्र बनाना चाहिए। यह चक्र पूजन की सिद्धि हेतु उत्तम है, जो निम्नलिखित चित्रानुसार है—

॥ गौरीतिलकमण्डलमिदम् ॥
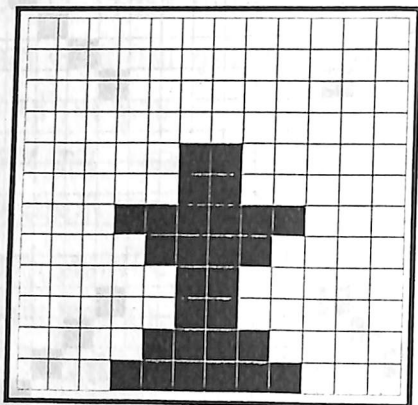
श्री विघ्न विनाशक गणेश यन्त्र
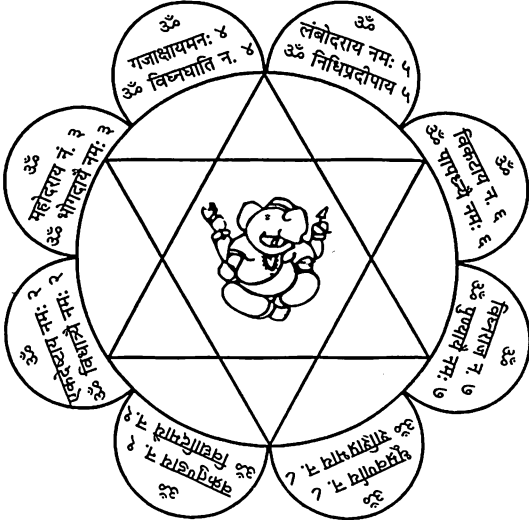
इस यंत्र को बनाकर प्राण प्रतिष्ठित करके किसी भी पूजन में या गणपति अनुष्ठान या वैवाहिक कार्य सिद्धि हेतु इस यन्त्र को सामने रख अनुष्ठान, जप या पूजन करें। तो वह तत्कालिक सिद्धि प्रदान करने वाला होता है।

चतुष्कोण हवन कुण्ड बनाकर किसी भी देवता का यज्ञ किया जा सकता है।
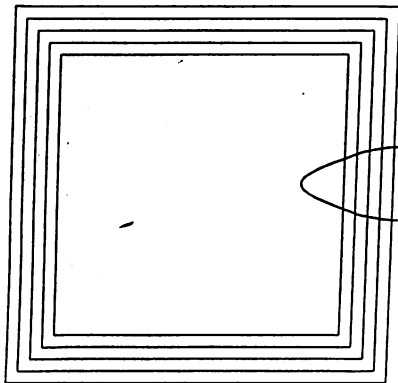
चतुष्कोणास्त्रंकुण्डम्

अष्टदल कमल कुण्ड बनाकर नवग्रह तथा शुभ कार्यों में हवन कर सकते हैं।
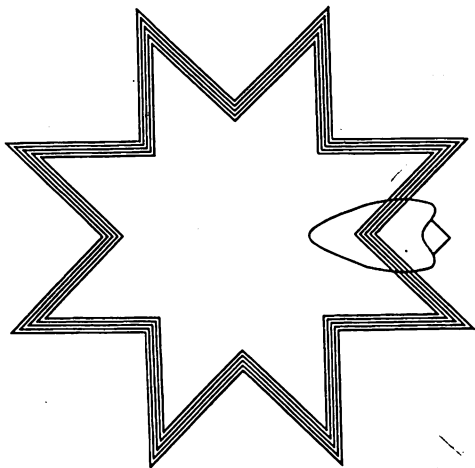
विषमअष्टास्त्रंकुण्डम्

कुण्ड बनाकर उसका पूजन कर जिस देवता का या देवी का पूजन है, उसमें शीघ्र प्रभाव करने की शक्ति संचरित होती है अतएव यज्ञ कार्यों में कुण्ड निर्माण करें।

अथ पूजन विधि

यजमान पूर्व दिशा की तरफ मुख करके बैठे तथा पंडित जी (ब्राह्मण, आचार्य) उत्तर दिशा की तरफ मुख करके बैठे।

सर्वप्रथम सभी पूजन के लिए वस्तुओं पर गंगाजल छिड़कें। अथवा यदि यजमान स्वयं करना चाहे तो अपने आप उत्तर दिशा में मुँह करके कुशा अथवा कम्बल के आसन पर बैठें एवं अपने परिवार तथा बच्चों सहित सभी को पूर्वाभिमुख अर्थात् पूरब की तरफ मुख करके बैठायें। तब सभी वस्तुओं पर गंगाजल छिड़के। फिर सभी अथवा यजमान तीन बार गंगाजल मिश्रित जल पिये।

केशवाय नमः

नारायणाय नमः

माधवाय नमः

तीन बार पढ़कर जल पियें। फिर हाथ धो डालें। फिर हाथ में जल लेकर अपने ऊपर छिड़कें। निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए कि तथा भावना करते हुए कि भगवान पुण्डरीकाक्ष हम सभी को अन्तःकरण से पवित्र करें तथा हम पूजन योग्य शुद्ध हों।

मंत्र : **ओऽम् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा यः स्मरेत पुण्डरीकाक्ष स वाह्यभ्यतरेः शुचिः।**

इस प्रकार पढ़कर फिर दीपक जलायें, धूपबत्ती अगरबत्ती जलायें। फूल, चावल, नैवेद्य लेकर दीपक की प्रार्थना करें।

मंत्र : **भो दीप। देवस्वरुपत्वं कर्मसाक्षी निर्विघ्न कृत। यावत कर्म समाप्तिः तावत्वं सुस्थिरो भवः।**

यजमान कुशा की पवित्री अनामिका अँगुली में दोनों हाथों में पहनें।

निम्नलिखित मंत्र पढ़ें—

मंत्र : **ॐ ब्राह्मणो ब्राह्मणी पत्नी लक्ष्मी सहितो**

जनार्दनः। उमया सहितः शम्भुः पवित्री धारयाम्यम्।

इस प्रकार पढ़कर दाहिने हाथ की अँगुली में पवित्री धारण करें। बायें हाथ की अनामिका अँगुली में पवित्री निम्नलिखित मंत्र पढ़कर धारण करें—

मंत्र : **ॐ कश्यपस्य पत्नी अदितिश्चन्द्र पत्नी च रोहिणी, बुद्धिर्विनायकश्चैव द्वितीय पवित्री धारयाम्यहम्।**

फिर आचमन के जलपात्र में फूल, चावल, पान, दूर्वा, नैवेद्य इत्यादि डालकर प्रणाम करें श्री गंगा जी को, तथा भावना करें कि हमारा पूजन स्थल श्री गंगा जी की कृपा से पवित्र हो।

मंत्र : **ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधौ कुरुः।**

तत्पश्चात् आचार्य, ब्राह्मण सभी पूजन स्थल पर बैठें। सभी श्रद्धालुओं को फूल, चावल, दूर्वा देकर निम्नलिखित

मंत्र पढ़ना चाहिए—

इस मंत्र का सांकेतिक अर्थ है कि इस मंत्र द्वारा देवताओं का अपने यज्ञ, पूजन स्थान पर देवताओं को मंत्रों द्वारा आमन्त्रित किया जाता है कि सभी शुभ कर्म के प्रदाता साक्षी देवताओं हमारे इस यज्ञ कार्य में सम्मिलित होकर हमारा कार्य निर्विघ्न विधि से सम्पन्न कराओ ऐसी भावना करें। तथा आचार्य, ब्राह्मण निम्नलिखित स्वस्तिवाचन मंत्र को पढ़ें—

अथ स्वस्तिवाचन

ॐ स्वस्तिऽन इन्द्रो बृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेदेवाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु॥ १॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥२॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो

विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निदेवेताव्वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा वसवो देवता रुद्रो देवताऽऽदित्यो देवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिदेवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ७ं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व७ंशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ५ ॥ ॐ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥ ६ ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्ग स्तुष्टुवा ॐ पस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ ७ ॥ ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रानश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरोभवन्ति मानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ८ ॥ ॐ

अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः विंश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ९ ॥ ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शंनः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥ १०॥ ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव॥ ११॥ ॐ एतंते देव सवितुर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमेव तेन यज्ञपति ते न मामव। ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ्ठंसमिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो ॐ प्रतिष्ठ॥ १२॥ ॐ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति॥ १३॥ ॥ इति स्वस्तिवाचन॥

सभी पूजन स्थल पर बैठे व्यक्ति भगवान गणेश पर अपने हाथों में लिये हुए चावल, फूल इत्यादि चढ़ा दें। तत्पश्चात् हाथ में यजमान फूल, चावल, दूर्वा, द्रव्य इत्यादि लेकर जिस कार्य की सिद्धि हेतु हवन करना है, उसका

संकल्प पढ़ें। हाथ में एक चम्मच जल लेकर पढ़ें।

संकल्प निम्नलिखित प्रकार से है—

संकल्प : ॐ विष्णु, र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद भागवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्या अद्य श्री ब्राह्मणोऽक्ति द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे भारतवर्षे आर्या वर्तेकदेशान्तर गते अमुक क्षेत्रे (श्री गुरुद्रोण मण्डलान्तरगते गढ़वाल प्रदेशस्य वास्तव्या, देहरादून मण्डलाऽतंरगते अमुक स्थाने) विक्रम शके बौद्धावतारे षष्टयब्दानां मध्ये अमुक सम्वतसरे अमुकायने, अमुक ऋतौ, महा मांगल्य प्रद मासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशि स्थितेदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान

स्थितेषुसस्तु एवं गुण गण विशेषण विशिष्टायरं शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः (अमुक शर्माऽहं, अमुक वर्माऽहं, अमुक गुप्तोहं, अमुक दासोऽहं) ममात्मनः श्रुति स्मृति पुरोक्त फल प्राप्तयर्थ मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य दीर्घायु रारोग्यैश्वर्वयादि वृद्धियर्थ समस्त कामना सिद्धयर्थ इह जन्मनि जन्मान्तरे वा शकल दुरितोपशमनार्थ तथा अखिल आधि व्याधि जरा पीड़ा मृत्यु परिहार द्वारा समस्त अरिष्ट निवारणार्थ सर्व पापक्षय पूर्वक समस्त ग्रह पीड़ा दोष निवारणार्थम् स्थिर लक्ष्मी कीर्ति लाभ, शत्रु पराजय, सदाभीष्ट सिध्यर्थ यथा सम्पादित सामग्रया स्वस्ति वाचनम्, पूर्वक गणपति पूजनम, कलशपूजन, नवग्रहपूजनं षोडश मातृका पूजनं यज्ञ नारायणं पूजनं च अमुक देव पूजा यज्ञ करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प पढ़कर हाथ में लिये हुए द्रव्य, फूल इत्यादि सब पात्र में छोड़ दें।

विशेष : संकल्प में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है वह इस बात को सूचित करता है कि जैसे 'अमुक मासे' का अर्थ है कौन सा महीना, तो जो महीना हो अर्थात् आप जिस महीने में पूजन यज्ञ इत्यादि शुभ कर्म कर रहे हैं उस महीने का नाम उच्चारण करें। जैसे—मार्गशीर्ष मासे और जहाँ जाति का वर्णन आया है जैसे—आप ब्राह्मण हैं तो अपने नाम के पश्चात् शर्माऽहं पढ़े, यदि आप क्षत्रिय हैं तो वर्माऽहं पढ़े, यदि आप वैश्य हैं तो गुप्तोऽहं गोयलोऽहं, जिन्दलोऽहं, बिन्दलोऽहं अग्रवालोऽहं इस प्रकार से उच्चारण करें। यदि आप चौधरी लिखते हों तो दासोऽहं इत्यादि संकल्प में उच्चारण करना चाहिए।

तथा यदि आप पूजन स्वयं कर रहे हैं तो आप संकल्प में 'करिष्ये' कहें। तथा यदि आप किसी से पूजन करवा रहे हैं तो आप 'करिष्ये' के स्थान पर 'करिष्यामि' उच्चारण करें। अर्थात् उक्त संकल्प आप अमुक यजमान से सम्पन्न

करवा रहे हैं।

अब यजमान ब्राह्मण के तिलक लगायें; रोली या चन्दन या हल्दी का जो उपलब्ध हो तथा निम्नलिखित मंत्र पढ़ें—

तिलक मंत्र : **ॐ भद्रमस्तु शिवं चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु। रक्षन्तुत्वां सुरा सर्वे सम्पदा सुस्थिरा भवः।**

यजमान ब्राह्मण के तिलक लगायें निम्नलिखित मंत्र ब्राह्मण पढ़े या सामर्थ्य हो तो यजमान स्वयं पढ़ें।

ब्राह्मण तिलक मंत्र : **नमो ब्राह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।**

रक्षा सूत्र (कलावा) हाथ में बाँधने का मंत्र : **ॐ येन बद्धो बली राजा दान वेन्द्रोमहाबल। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे रक्षय माचल।**

तथा यदि सौभाग्यवती स्त्रियों को तिलक लगायें तो निम्नलिखित मंत्र पढ़ना चाहिए—

सौभाग्यवती स्त्री तिलक मंत्र : **ॐ श्रीश्चते**

लक्ष्मीश्च पत्न्यामवहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्याप्तम्। इष्णन्निषाणां मुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण। सौभाग्यवती भवः आयुष्मती भवः।

इस प्रकार मंत्र पढ़कर सौभाग्यवती स्त्री का तिलक करें। यदि तिलक कन्या को लगाना हो तो निम्नलिखित मंत्र पढ़कर कन्या के तिलक लगायें—

कन्या तिलक मंत्र : ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससत्यश्वकः सुभद्रिकाम कामपील वासिनीम्। दीर्घायु भवः।

यदि तिलक विधवा स्त्री को लगाना हो तो निम्नलिखित मंत्र पढ़कर तिलक लगाना चाहिए—

विधवा तिलक मंत्र : तद्विष्णो परमम्पद सदा पश्यन्ति सुरयः। दिवीव चषुरा राततम्। त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णु गोंपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्माणि धारयन। तद्विप्रासी विपन्यवो जाग्रवासः। सम्मिन्धते विष्णोर्यतः

परम परम्। आयुष्मती, धर्मवती, विष्णु व्रत वती भव: कल्याणमऽस्तु।

गणेश पूजन

हाथ में सभी फूल, चावल, दूर्वा लेकर गणेश इत्यादि देवताओं को प्रणाम करके अपने कार्य की सिद्धि के हितार्थ निर्विघ्न पूजन यज्ञ के हितार्थ सभी देवताओं को निम्नलिखित

मंत्रों से हाथ जोड़कर प्रणाम करें—

प्रणाम मंत्र :

श्रीमन्महा गणाधिपतये नमः।

श्री लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः।

उमा महेश्वराभ्यां नमः।

वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः।

शची पुरन्दराभ्यां नमः।

इष्ट देवताभ्यो नमः।

कुल देवताभ्यो नमः।

ग्राम देवताभ्यो नमः।

स्थान देवताभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनांत्वा निधिपतिꣳहवामहे

वसोमम। आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवौ नमो नमो ब्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिश्यश्च वो नमो नमो विरुपेभ्यो विश्व रुपेभ्येश्चवो नमः।

इस प्रकार मंत्र पढ़कर हाथ में लिए हुए फूल इत्यादि गणेश जी पर चढ़ा दें।

तत्पश्चात् फूल लेकर निम्नलिखित मंत्रों को पढ़कर गणेश जी का आवाहन करें—

आवाहन : ॐ गणानांत्वा गणपतिꣳहवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्त मम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः ऋण्वन्भूतिमिःसीद सादनम्॥ १॥ हे हेरम्ब! त्वमेह्ये ह्याम्बिका त्र्यम्बकात्मज सिद्धिबुद्धिपते त्रयक्षलक्ष लाभपति पितः। नागस्य नागहार त्वं गणराज चतुर्भुज। भूषितैः स्वायुधैर्दिव्यैर्दन्तपाशां-कुशपरश्वधैः।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च ममक्रतोः। इहागत्य गृहाणत्वं पूजां योगं च रक्ष मे।

ॐ रिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार मंत्र पढ़कर फूल गणेश जी को चढ़ाये। तत्पश्चात् गणेश जी का फूल इत्यादि लेकर ध्यान करें।

अथ ध्यान मंत्र : गजाननं भूत गणादिसेवितं कपित्थ जम्बू फल चारुभक्षणम्। उमासुतं शोकविनाश कारकम् नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥ शिवतनय वरिष्ठं सर्वकल्याणमूर्ति परुष कमलहस्तं शोभितं मोदकेन। अरुण कुसुम मालां व्याल यज्ञोपवीति मम हृदय कुरु निवासं श्रीगणेशं नमामि॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वक सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्॥

इस प्रकार ध्यान करके गणेश जी और माँ अम्बिका

(गौरी) का पूजन करके निम्नलिखित वस्तुओं से मूर्ति हो तो षोडशोपचार पूजन करें।

आह्वान : आगच्छ भगवन देव स्थाने चात्र स्थिरो भवः। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्वम सन्निधौ भवः॥ आह्वानं समर्पयामि्।

प्रतिष्ठा—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रतिष्ठापयामि।

आसन—

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनं समर्पयामि।

पाद्य—

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।

पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।। पा. स.

अर्घ्य—

अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।
करुणां कुरु मे देव! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ।। अ. स.

आचमन—

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ।। आ. स.

स्नान—

गंगा - सरस्वती - रेवा - पयोष्णी - नर्मदाजलैः ।
स्नापितोऽपि मया देव तथा शान्ति कुरुष्व मे ।। स्ना.

दुग्धस्नान—

कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषा जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।। दु. स्ना.

दधिस्नान—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।

दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ द. स्ना.

घृतस्नान—

नवनीतसमुत्पन्न सर्वसन्तोषकारम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ घृ. स्ना. स.

मधुस्नान—

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ म. स्ना. स.

शर्करास्नान—

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ श. स्ना. स.

पञ्चामृतस्नान—

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।

पंचामृत मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥ पं स्ना. स.

शुद्धस्नान—

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शु. स्ना. स.

वस्त्र—

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥ वस्त्र स.

उपवस्त्र—

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः ।
वासोअग्ने विश्वरूपꣳ सं व्ययस्व विभावसो ॥ उ. स.

यज्ञोपवीत—

नवमिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ।
सपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ यज्ञो. समर्पयामि

शमीपत्र—

शमी शमय मे पाप शमी लोहितकंटका।

धारोण्यार्जुनवाणानां रामस्य प्रतिवादिनी ॥ श. स.

आभूषण—

अलंकारान्महादिव्यान्नानारत्न - विनिर्मितान्।

गृहाण देवदेवेश! प्रसीद परमेश्वर! ॥ आ. स.

अबीरगुलाल—

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।

अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः ॥ अ. स.

मधुपर्क—

कांस्ये कांस्ये विहितो दधिमध्वाज्यसंयुतः।

मधुपर्को मयानीतः पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥ म. आच.

गन्ध—

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुर श्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥ गं. स.

रक्त चन्दन—

रक्त चन्दनसंमिश्रं पारिजातसमुद्भवम्।
मयादत्तं गृहाणाशु चन्दनं गन्धसंयुतम्॥ र. च. स.

रोली—

कुंकुमं कामनादिव्यं कामनाकामसम्भवम्।
कुंकुमेनार्चितो देव गृहाण परमेश्वर!॥ कुं. स.

सिन्दूर—

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्॥ सि. स.

अक्षत—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!॥ अ. स.

पुष्प—

पुष्पैर्नानाविधैर्दिव्यैः कुमुदैरथ चम्पकैः।

पूजार्थं नीयते तुभ्यं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्॥ पु. स.

माला—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर!॥ मा. स.

बिल्वपत्र—

त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तव पूजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर!॥ बि. प. स.

दुर्वा—

त्वं दुर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरैरपि।
सौभाग्यं सन्तति देहि सर्व कार्यकरी भव॥ दुर्वा. स.

दूर्वांकुर—

दूर्वांकुरान् सुहारीतानमृतान् मंगलप्रदान्।
आनीतास्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!॥ दूर्वा. स.

सुगन्धतैल—

चम्पकाशोकबकुलं मालतीमोगरादिभिः।

वासितं स्निग्धतासेतुं तैलं चारु प्रगृह्यताम्॥ सु. सर्मपयामि

धूप—

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ धू. सर्मपयामि

दीप—

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥ दी. स.

नैवेद्य—

शर्कराघृतसंयुक्त मधुरं स्वादु चोत्तमम्।
उपहारसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ नैवेद्यं निवेदयामि

मध्ये पानीय—

अतितृप्तिकरं तोयं सुगन्धिं च पिवेच्छया।
त्वयि तृप्ते जगत्तृप्तं नित्यतृप्तं महात्मनि॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ म. पा. स.

ऋतुफल—

नारिकेलफलं जम्बूफलं नारङ्गमुत्तमम्।

कूष्माण्डं पुरतोभक्त्या कल्पितं प्रतिगृह्यताम्॥ ऋ. स.

आचमन—

गंगाजलं समानीतं सुवर्ण कलशे स्थितम्।

आचम्यतां सुरश्रेष्ठ! शुद्धमाचमनीयकम्॥ आ. स.

अ. ऋ.—

इदं फलं मया देव! स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ अ. ऋ. स.

पान-सुपारी—

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।

एलाचूर्णादिसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥ तां. सं.

दक्षिणा—

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः ॥
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥ द. द्रव्यं स.

आरती—

चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च।
त्वमेव सर्वज्योतीषि आर्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ आ. स.

सभी वस्तुएँ चढ़ाकर भगवान गणेश जी को प्रणाम निम्नलिखित मंत्रों द्वारा करना चाहिए—

ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रोगजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छणुयादपि ॥ विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ वक्रतुण्डो महाकाय कोटिसूर्य्यसमप्रभ। अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

सर्व मङ्गलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ॥ शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥ १॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ॥ येषां हृदिस्थो भगवान मङ्गलायतनो हरिः ॥ २ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते। तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ ३ ॥ लाभस्तेषां जयस्तोषां कुतस्तेषां पराजयः॥ येषा मिन्दी बरश्यामो हृदयास्थो जनार्दनः ॥ ४ ॥ सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः ॥ देवादिशन्तु न सिद्धिः ब्रह्मा विष्णु महेश्वराः ॥ ५ ॥ श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

कलश पूजन

गणपति की वेदी पटा पर बनावे उसी पर अष्टदल कमल बनाकर धान्य या चावल रख उस पर कलश की स्थापना करे।

भूमि स्पर्श—ॐ भूरसि भूमिरस्यादितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवी दृ ꣳ ह पृथिवी मा हिꣳसीः ॥

इस उक्त मंत्र से भूमि का स्पर्श करें।

धान्य—ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वा दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिररण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना

चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

इससे कलश के नीचे रखे हुए चावलों का स्पर्श करें।

सप्तधान्य पर कलश स्थापना— ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा नि वतस्व सा नः सहस्त्र धुक्ष्योरुधारा पयस्वती पुनर्मा विश्वताद्रयिः॥

कलश में जल छोड़े— ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थोवरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन मसि वरुणस्य ऋतसदन्माऽसीद॥

कलश में जल छोड़े।

कलश में गन्ध छोड़े— ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ गं. स.

कलश में सर्वौषधि— ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैन वभ्रू णामह ६ं शतं धामानि सप्त च॥

कलश में दूर्वा रक्खे—ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती पुरुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च॥ दू. स.

कलश पर पंच पल्लव लगावे—ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्॥

कलश में सप्तमृत्तिका डाले—ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म स प्रथाः॥ स. मृ. स.

पूगी फल (सुपारी) चढ़ावे—ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। वृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳहसः॥ पू. स.

कलश में पंचरत्न डाले—ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमात्। दधद्रत्नानि दाशुषे॥ पं. समर्पयामि॥

कलश में सुवर्ण या द्रव्य डाले— ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमा कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ द्र. स.

वस्त्र (मौली) बाँधे— ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्र धारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥ वस्त्रं समर्पयामि॥

पूर्णपात्र से ढक दें— ॐ पूर्णादर्वि परा पत सुपूर्णा पुनराऽपत वस्नेव विक्राणावहा इषमूर्ज ꣳ शतक्रतो॥ पू. पा. स.॥

पूर्ण पात्र को कलश पर रक्खे।

श्रीफल— ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पाश नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामु म इषाण सर्वलोक म इषाण॥ श्रीफलं समर्पयामि॥

नारियल पर लाल वस्त्र लपेट कर पूर्ण पात्र पर रख दे।

वरुणावाहन— ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शस्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेहवोरु पुध्सथ्ठ मा न आयुः प्रमोषीः॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्ग सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि ॐ भर्भुवः स्वः श्री वरुण इहागच्छ, इह तिष्ठ, स्थापयामि, पूजयामि इति पंचोपचारैः सम्पूज्य।

प्रतिष्ठा— ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिम तनोत्वरिष्टं यज्ञ थ्ठं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्ता ॐ प्रतिष्ठ॥

प्रार्थना

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा बसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः॥
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा॥
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।
कलशेवरुणाद्यावाहिताः देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु॥
पूजन कर आगे लिखी प्रार्थना करें।

कलश की प्रार्थना

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूलतत्रस्थितौ ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः॥ कुक्षौतु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वणः॥ अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी सदा॥ आयान्तु "यजमानस्य" (ममगृहे च) दुरित

क्षयकारका: ॥

सर्वे समुद्रा: सरितस्तीर्थानि जलदा नदा: ॥ आयान्तु मम यजमानस्य गृहे च दुरित क्षयकारका: ॥

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि सदा कुम्भो विधृतो विष्णुना स्वयम्॥ त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवा: सर्वे त्वयि स्थिता:। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणा: प्रतिष्ठिता: ॥ शिव: स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापति:। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा: सपैतृका: ॥ त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत: कामफलप्रदा:। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव ॥ सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

इस प्रकार कलश की प्रार्थना करके हाथ में लिए हुए अक्षत कलश पर चढ़ा दें।

साधारण होम (हवन)

सर्वप्रथम लकड़ी जोड़कर तथा सामग्री तैयार करके यज्ञ का पूजन करें।

अग्नि को बांस की नली या कर्पूर से निम्नलिखित मंत्र से प्रज्जवलित करें—

अग्नि प्रज्वलित मंत्र— **चन्द्रमा मनसो जातः तच्क्षोः सूर्यऽअजायत। श्रोताद्वायुप्राणश्च मुखादग्निर्जायत्।**

इस मंत्र से अग्नि प्रज्जवलित करें। तत्पश्चात् हाथ में

फूल चावल लेकर अग्नि का ध्यान करें।

अग्नि का ध्यान मंत्र— **ॐ चत्वारि शृंगात्यो यस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँऽ आविवेश। ॐ मुखां यः सर्वदेवानां दव्यभुक कव्यभुक तथा। पितृणां च नमस्तस्मै विष्णवे पावकात्मने॥**

इस प्रकार से अग्नि का ध्यान करके '**ॐ अग्ने शाण्डिल्य गोत्र मेषध्वज प्राङ्मुख मम सम्मुखो भवः**'।

इस प्रकार से अग्नि की प्रार्थना करके '**पावकाग्नये नमः**' इस मंत्र से पंचोपचार पूजन करें।

चन्दन (रोली), फूल, धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन करें। तत्पश्चात् घी से स्रुवा द्वारा अग्नि के जलते हुए अंश पर निम्नलिखित मंत्रों से तीन आहुति दें।

१. ॐ भूः स्वाहा इदम अग्नये न मम।

२. ॐ भुवः स्वः इदं वायवे न मम।

३. ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।

अब हविष्यान्न की सामग्री हवन में निम्नलिखित मंत्रों से डालें—

ॐ अग्नये स्वाहा, इदम् अग्नये इदं न मम।

ॐ धन्वन्तरये स्वाहा इदम् धनवन्तरये न मम।

ॐ वि विश्वेभ्यो देवेभ्या स्वाहा इदं विश्वेभ्यो देवेभ्यो न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।

ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा। इदम् अग्नये स्विष्टकृते न मम।

ॐ तन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवयासि सीष्ठाः।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वादेवꣳ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत स्वाहा। इदं अग्नी वरुणाभ्याम्।

ॐ सत्वन्नौऽअग्ने नो वरुणंꣳ रराणो वीहि मृडीकꣳ

सुह्वो नऽएधि स्वाहा इदं अग्नये ॥

ॐ अयाश्चाग्ने शयनाभिशस्ति पाश्चसत्वं मित्व भया असि आयानो यज्ञं वहायास्यनो धेहि भेषजं स्वाहा। इदम् अग्नये। ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितातामहतिस्ते भिर्न्नो अद्य सवितोत र्विष्णु विश्वे मुचंतुमरुतः स्वर्काः स्वाहाः। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः सवर्केभ्यः ॥

ॐ उद्युत्तमं वरुण पाशमस्मदः बाधमं विमध्ययमॢ श्रृथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितयैस्याम स्वाहा। इदं वरुणाय सताः सर्व प्रायश्चित्त संज्ञकाः।

ॐ गणपतये स्वाहा ॥ इदं गणपतये।

ॐ विष्णवे स्वाहा ॥ इदं विष्णवे।

ॐ शंभवे स्वाहा ॥ इदं शम्भवे।

ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा ॥ इदं लक्ष्म्यै।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा ॥ इदं सरस्वत्यै।

ॐ भूम्यै स्वाहा ।। इदं भूम्यै ।

ॐ सूर्याय स्वाहा ।। इदं सूर्याय ।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा ।। इदं चन्द्रमसे ।

ॐ भौमाय स्वाहा ।। इदं भौमाय ।

ॐ बुधाय स्वाहा ।। इदं बुधाय ।

ॐ वृहस्पतये स्वाहा ।। इदं वृहस्पतये ।

ॐ शुक्राय स्वाहा ।। इदं शुक्राय ।

ॐ शनैश्चराय स्वाहा ।। इदं शनैश्चराय ।

ॐ राहवे स्वाहा ।। इदं राहवे ।

ॐ केतवे स्वाहा ।। इदं केतवे ।

ॐ ब्युष्टयै स्वाहा ।। इदं व्युष्टयै ।

ॐ उग्राय स्वाहा ।। इदं उग्राय ।

ॐ शतक्रतवे स्वाहा ।। इदं शतक्रतवे ।

ॐ प्रजापतये स्वाहा ।। इदं प्रजापतये ।

इति मनसा प्रजापत्यम् ।

ॐ अग्नये स्विष्ट कृते स्वाहा ।। इदमग्नये स्विष्कृते।

ॐ सूर्यो ज्योंति ज्योति सूर्य स्वाहा ।।

ॐ सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वचः स्वाहा ।।

ॐ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

ॐ सजूदेवेन सवित्रा सजूरुपसेन्द्र वृत्या जुषाणः सूर्योवेतुः स्वाहा ।।

ॐ अग्नि ज्योंति ज्योर्ति अग्नि स्वाहा ।।

ॐ अग्निवर्चो ज्योतिवचः स्वाहा ।।

ॐ अग्नि ज्योंति ज्योर्तिरग्नि स्वाहा ।।

ॐ सर्जूदनः सवित्रार जराल्येम्द्र वृत्या जुषाणी अर्ग्निवेतु स्वाहा ।।

इसके पश्चात् पान में शेष बची हुई हवन सामग्री तथा सुपारी अथवा नारियल रखकर पूर्णाहुति दें और निम्नलिखित मंत्र को पढ़ें—

पूर्णाहुति मंत्र— ॐ मूर्द्धानं दिवो आरति पृथिव्यां

वैश्वानरं मृत आजातमग्निम।

कविं सम्राज मतिथिम् जनानामासन्नापात्रं जनयंत देवाः स्वाहाः ॥

इस प्रकार पूर्णाहुति दें तथा इसके बाद घी की धार अग्नि में डालें (वर्सोधारा) निम्नलिखित मंत्र से करें—

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं व्वसो पवित्रमसि सहस्रधारम देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा काम धुक्षः स्वाहा ॥

इदं मग्नये वैश्वानराय न मम ॥

इति वर्सोधारा जुहुयात्।

तत्पश्चात् हवन की भस्म (राख) अपने मस्तक पर लगायें तथा भावना करें कि यह देव समूह से मानित सम्पन्न हवन क्रिया की भस्म हमारी आत्मा तथा परिवार कल्याण के निमित्त शारीरिक, मानसिक, आर्थिक बल प्रदान करें।

॥ साधारण हवन विधि समाप्तः ॥

संक्षिप्त हवन-कर्म पद्धति

हवन कर्त्ता चौकोर वेदी बनाकर उस पर जल छिड़क कर आम की लकड़ियाँ रखे और अग्नि रखकर नीचे के मंत्र से अग्नि देवता का ध्यान करे—

ॐ चत्वारि शृंगा त्रयोऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां आविवेश॥

इसके बाद नीचे के मंत्र से अग्नि देवता का आवाहन करे—

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि॥

फिर अग्नि को प्रज्वलित कर निम्न मंत्र से अग्नि का पाद्यादि उपचारों से पूजन करें—

ॐ मुखं यः सर्वदेवानां हव्यभुक् कव्यभुक् तथा। पितृणां च नमस्तुभ्यं विष्णवे पावकात्मने पादयोः पाद्यं

समर्पयामि इत्यादि।

इसके बाद नीचे के मंत्रों से स्रुवा से घी की आहुतियाँ अग्नि में छोड़ें—

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। (इस मंत्र को मन में उच्चारण कर आहुति छोड़े)

ॐ इन्द्राय स्वाहा इदं इन्द्राय। (इस मंत्र से आधार पर आहुति छोड़ें)

अब आगे के मंत्रों से अग्नि में आहुतियाँ छोड़ें—

ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये।

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये।

ॐ भुवः स्वाहा इदं सूर्याय।

ॐ त्वन्नो अग्नेवरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो-विश्वाद्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रणाणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्याम्॥

ॐ अयाश्चाग्नेस्य नभि शस्ति पाश्च सत्यमित्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज ७ स्वाहा। इदमग्नये अयसे॥

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो मरुद्भयः स्वर्केभ्यः॥

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसोऽअदितये स्यामः स्वाहा। इदं वरुणाय॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये। (यह मंत्र मन में कहे)

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते॥

ॐ सर्वं वै पूर्ण ७ स्वाहा।

इस प्रकार यह सामान्य पूजा करके जो मुख्य कर्म करना हो उसे यथाविधि करे। उसकी समाप्ति के बाद नीचे के अनुसार पुष्पाजंलि आदि क्रियायें करके पूजा का विसर्जन करें।

पुष्पांजलि

किसी भी कर्म की समाप्ति पर देवता के लिए पुष्पाजंलि अर्पित की जाती है। वह पुष्पाजंलि नीचे के मन्त्र पढ़कर अर्पित की जाती है—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्मांणि प्रथमान्यासन्।
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥१॥
ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं बैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् काम कामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥२॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्य राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समंतपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्॥ ३ ॥

ॐ तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो

मरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षतस्य कामप्रेविश्वेदेवा सभासदः ॥ ४ ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् संबाहुभ्यान्धमति संपतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन्देव एकः ॥ ५ ॥

तिलक

पुष्पांजलि छोड़ चुकने पर तिलक लगाये—

ॐ युञ्जन्ति ब्रध्न मरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि। तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि रोचनम् ॥

विसर्जन

तब हाथ में अक्षत लेकर विसर्जन करें, यथा—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामप्रदानाय पुनरागमनाय च ॥

सर्वतोभद्रमंडल देवतानां होमः

ॐ गणपतये स्वाहा।
ॐ ब्राह्मणे स्वाहा।
ॐ ईशानाय स्वाहा।
ॐ अग्नये स्वाहा।
ॐ निऋतये स्वाहा।
ॐ वायवे स्वाहा।
ॐ अध्वराय स्वाहा।
ॐ अदभ्यः स्वाहा।
ॐ नलाय स्वाहा।
ॐ प्रभासाय स्वाहा।
ॐ एकपदे स्वाहा।
ॐ विरुपाक्षाय स्वाहा।
ॐ रवताय स्वाहा।
ॐ दुर्गायै स्वाहा।
ॐ सोमाय स्वाहा।
ॐ इन्द्राय स्वाहा।
ॐ यमाय स्वाहा।
ॐ वरुणाय स्वाहा।
ॐ ध्रुवाय स्वाहा।
ॐ सोमाय स्वाहा।
ॐ अनिलाय स्वाहा।
ॐ प्रत्युषाय स्वाहा।
ॐ अजाय स्वाहा।
ॐ अर्हिबुध्न्याय स्वाहा।
ॐ रैवताय स्वाहा।
ॐ सपाय स्वाहा।

ॐ बहुरुपाय स्वाहा। ॐ त्र्यम्बकाय भुरेश्वराय स्वाहा।

ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ जयन्ताय स्वाहा।

ॐ पिनाकिने स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा।

ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा

ॐ यमाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा।

ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ भगाय स्वाहा।

ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा।

ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ त्वष्टे स्वाहा।

ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ अश्विभ्यां स्वाहा।

ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा।

ॐ वसवे स्वाहा। ॐ फालाय स्वाहा।

ॐ कामाय स्वाहा। ॐ अध्वराय स्वाहा।

ॐ रोचनाय स्वाहा। ॐ पुरुरवसे स्वाहा।

ॐ आर्द्रवाय स्वाहा। ॐ सोमपाय स्वाहा।

ॐ अग्निष्ठात्ताय स्वाहा। ॐ वर्हिषदे स्वाहा।

ॐ सुकालाय स्वाहा।
ॐ शूद्रांय स्वाहा।
ॐ कश्यपाय स्वाहा।
ॐ भारद्वाजाय स्वाहा।
ॐ गौतमाय स्वहा।
ॐ वशिष्ठाय स्वाहा।
ॐ वासुकये स्वाहा।
ॐ तक्षकाय स्वाहा।
ॐ पद्माय स्वाहा।
ॐ शंखपालाय स्वाहा।
ॐ पिशाचेभ्याः स्वाहा।
ॐ सिद्धेभ्यः स्वाहा।
ॐ सर्पेभ्या स्वाहा।
ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
ॐ हूहै स्वाहा।

ॐ एक श्रृंङ्गाय स्वाहा।
ॐ सोमाय स्वाहा
ॐ अत्रये स्वाहा।
ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
ॐ जमदग्नये स्वाहा।
ॐ अनन्ताय स्वाहा।
ॐ शेषाय स्वाहा।
ॐ कर्कोटकाय स्वाहा।
ॐ महापद्माय स्वाहा।
ॐ कंबलाय स्वाहा।
ॐ गुह्यकेभ्यः स्वाहा।
ॐ भूतेभ्या स्वाहा।
ॐ विश्वावसवे स्वाहा।
ॐ हयायै स्वाहा।
ॐ धृताच्यै स्वाहा।

ॐ मेनकायै स्वाहा।
ॐ उर्वस्यै स्वाहा।
ॐ सुकेस्यै स्वाहा।
ॐ रुद्रेभ्याः स्वाहा।
ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा।
ॐ महादेवाय स्वाहा।
ॐ मरुद्गणाय स्वाहा।
ॐ रोगाय स्वाहा।
ॐ वसुभ्यः स्वाहा।
ॐ अदभ्यः स्वाहा।
ॐ मारुताय स्वाहा।
ॐ जगत्प्राणाय स्वाहा।
ॐ मातरिश्वने स्वाहा।
ॐ गंङ्गा़यै स्वाहा।
ॐ सरय्यवै स्वाहा।

ॐ रम्भायै स्वाहा।
ॐ तिलोत्तमायै स्वाहा।
ॐ मंजुघोषाय स्वाहा।
ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
ॐ भूलायै स्वाहा।
ॐ श्रियै स्वाहा।
ॐ पितृभ्या स्वाहा।
ॐ मृत्यवे स्वाहा।
ॐ विघ्नराजाय स्वाहा।
ॐ समीराय स्वाहा।
ॐ मरुते स्वाहा।
ॐ समीरणाय स्वाहा।
ॐ मेदिन्यै स्वाहा।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।
ॐ कौशिक्यै स्वाहा।

ॐ वैत्रवत्यै स्वाहा।
ॐ ताप्तये स्वाहा।
ॐ कृष्णाय स्वाहा।
ॐ तुंगभद्रायै स्वाहा।
ॐ लवण समुद्राय स्वाहा।
ॐ सुरा समुद्राय स्वाहा।
ॐ दधि समुद्राय स्वाहा।
ॐ जीवन समुद्राय स्वाहा।
ॐ सोमाय स्वाहा।
ॐ बुधाय स्वाहा।
ॐ शनैश्चराय स्वाहा।
ॐ केतवे स्वाहा।
ॐ महेश्वर्यै स्वाहा।
ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।

ॐ गोदावर्यै स्वाहा।
ॐ रेवायै पयौ दायै स्वाहा।
ॐ भीमरथ्यै स्वाहा।
ॐ क्षुद्रनदीभ्या स्वाहा।
ॐ इक्षु समुद्राय स्वाहा।
ॐ सर्पि समुद्राय स्वाहा।
ॐ क्षीर समुद्राय स्वाहा।
ॐ आदित्याय स्वाहा।
ॐ भौमाय स्वाहा।
ॐ वृहस्पतये स्वाहा।
ॐ राहवे स्वाहा।
ॐ ब्रह्मायै स्वाहा।
ॐ कौमार्यै स्वाहा।
ॐ वाराहै स्वाहा।
ॐ चामुण्डायै स्वाहा।

ॐ वज्राय स्वाहा।
ॐ दण्डार्यै स्वाहा।
ॐ पाशाय स्वाहा।
ॐ गदायै स्वाहा।
ॐ पद्माय स्वाहा।
ॐ महाविष्णवे स्वाहा।
ॐ शक्तये स्वाहा।
ॐ खड्गाय स्वाहा।
ॐ अंकुशाय स्वाहा।
ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।
ॐ चेक्राय स्वाहा।

ॐ गणपतये स्वाहा से प्रारम्भ करें तथा **ॐ महाविष्णवे स्वाहा** तक देवताओं को आहुति दें। यह सर्वतो भद्रमण्डल के देवताओं की आहुति (होम) है।

रणधीर प्रकाशन
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार (उ. प्र.)
फोन : (०१३४) २२६२९७

॥ सर्वतोभद्रमण्डलमिदम् ॥

॥ गौरीतिलकमण्डलमिदम् ॥

चतुष्कोणास्त्रंकुण्डम्

॥ विषमअष्टास्त्रंकुण्डम् ॥

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार